



रामायणमां रजू थयेल सीतानुं पात्र डॉ. विनोद पी. चौधरी (नाणोटा)

वाल्मीकिए रामचंद्रना जीवननी चरित्रनो उच्च अने भव्य आदर्श देखाइयो छे. जगतमां उच्चतर अने भव्य कोई व्यक्ति देखाय तो ते राज ज समजवो. चरित्रनायकने शोभे तेवी पवित्र अने दिव्य पत्ती होवी जोईअ. भारतीय स्त्री जीवननो अंतिम आदर्श एटले सीता. वाल्मीकिने स्त्रीत्वना अंतिम आदर्शो सीतामां जोवा मण्या हता. खरेखर, आजे आपणे एक अति दिव्य अने अति मुहु ऐवुं चरित्र पुण्य हाथमां लीघु छे. सीतानुं स्त्री जीवन जोईने आधुं जगत आश्वर्यचक्ति थयुं छे. ते माटे एक लभवामां आवे छे के “No woman that I have read of certainly, no woman that I have seen, comes near valmiki's conception of site. She is unapproachable.” आवा उद्गारो जे स्त्री माटे नीकणे छे, तेवा एक मातृश्रीना चरित्रानुं आजे आपणे अवलोकन करीअ.

ऐना जेवुं लावण्यरत्न, स्वर्गीय पुण्य तथा ऐना जेवा स्त्रीत्वनो अंतिम आदर्श मानवना पेटमां केम निर्माण थशे ऐवी कविने शंका आवी. राम जेवो भव्य पुरुष कदाच नव मास पेटमां रहीने निर्माण थर्ड शके, पण सीता जेवुं स्त्रीरत्न मानवीना पेटमां निर्माण थाय ए कविने अशक्य लाग्युं. माटे ते रत्नने अयोनिज राघ्युं छे. वाल्मीकिने विश्वास हतो के हजारो वर्षो सुधी दीर्घकाळ सुधी रामायण लोकहहृदयमां स्थापित रहेशे. मानवने मार्गदर्शक बनी रहेशे. ज्यांसुधी सत्यना विचारो कायम चाले छे. लोकदृष्टिमां मांगल्य वसे छे. त्यांसुधी लोको रामायण वांशशे. चिकित्सक लोको उपेक्षा करेशे अने कहेशे. “बौद्धिक देवाणुं छे. अंधश्रद्धा छे गप्पां छे.” पण ते बधुं सहन करवा तैयार थर्डने वाल्मीकिए सीताने अयोनिज राखी छे.

दांपत्यजीवनना गुणो राम पासे हता तेम सीता पासे पण हता ज. राम के सीता सामान्य व्यक्ति न हतां. सीता पासे अलौकिक गुणो जोई अेवा आकृष्ट थया छे के बंनेना देह जुदा पण आत्मा एक ज हता. राम—सीताना सौंदर्य तथा गुणोनुं वर्णन वांचीए त्यारे लागे के, गुणोथी सौंदर्य यडे के सौंदर्यथी गुणो वधारे आकर्षक छे? ऐनो पतो ज लागतो नथी. टोचना गुणो अने मानवीना पेटमां जन्मे के केम तेना विशे विवादास्पद लागे, तेवुं सौंदर्य सीता पासे हतुं. रामना हहृदयमां शुं छे ते न पूछितां अने न कहेतां सीता केवण रामनी मुखाकृति जोईने न जाणती हती. दांपत्यजीवननो रम्यतम संसार कविअे अही चीतर्यो छे. आ संसार रम्यतर अने रम्यतर हतो तेमना जेवो संसार कोईनो हतो ज नहि.

सीतानुं जीवन तपासीशुं तो अपहरण पहेलानो काण सीताना जीवनमां सुखनी टोचना काण हतो, परंतु मारा हिसाबे सीताना वनवासनो काण सुखीमां सुखी हतो, राम आगण सीताने भन जगतनी एकेक वात—अरे स्वर्ग अने भोक्ष पण तुच्छ हता. रामनी पण सीता माटे तेवी ज भावना हती. आवी बंनेनो आत्मीय संबंध हतो. रामना पराक्रम पर सीताने खूब ज विश्वास हतो. तेथी रामना बाहु पर काणजीनो भार मूळी सीता विश्रद्ध. बनी वनमां पण लीलाथी नायती हती, कूदती हती. छोकरा करता वहु वनमां गर्द तेनुं सासुने पण बहु दुःख हतुं वहुना वर्तननी आ उच्चता देखाइ छे के सासुना भनमां छोकरा करतां पण वहु पर अनहट प्रेम निर्माण थयो हतो.

कुटुंबनी प्रत्येक व्यक्ति तेना गुणोने लीघे आकर्षाईने मुऱ्य बनी ‘सीता सीता’ कही नायती हती. अयोध्यानी प्रत्येक स्त्री तेने आदर्श तरीके जोती हती. आ तो थर्ड सामान्य मानवीओनी वात. तेनी त्याग अने प्रेमनी पवित्र भावनाने लीघे जंगलमां तपस्वीओ पण तेना तरफ प्रेमथी जोता हता. अत्रि ऋषिनी पत्ती अनसुया कहे छे. “हे पतित्रता सीता, तने शो आशीर्वाद आपुं? ताराथी बंने कुणनो उद्वार थयो छे.” तपस्वीश्रेष्ठ अगस्त्य ऋषि पण रामने ज उपदेश आपता कहे छे, “कठोर कर्तव्याचरण करनारी सीता जेवी स्त्रीनुं बधुंज प्रिय करजो.” महापुरुषोनो विश्वास संपादन कर्यो हतो. आवो विश्वास संपादन करवो ए लोकोत्तर वात छे. तेनो पतिप्रेम वर्णन करी न शकाय एवो अलौकिक हतो.

सीताना बुद्धिप्रागलभ्यने लीघे रामने घाशीवधत अेमनी जोडे शास्त्रार्थनी अने तत्वार्थोनी चर्चा करवी पडी छे. एकवधते सीताए प्रश्न कर्यो के, “अरण्यवासी थया तो हाथमां शस्त्र केम राख्युं छे? कारण, अरण्यवासीओने तो अहिंसा अने

सत्यनां शस्त्रो शोभे.” रामने आ शंकाना जवाब माटे पोते शस्त्रसंन्यास केम नथी ग्रहण कर्यो ते माटे अरण्यकांडमां मोटू प्रवचन आपवुं पडयुं छे. आनाथी सीतानी विद्वता अने बुद्धिमत्ता स्पष्ट थाय छे. आवी बुद्धिमान अने विद्वधी स्त्री पण पतिमां आत्मसमर्पण करी शके छे. ए सीताना जीवननुं वैशिष्ट्य छे.

पति पर ऐटलो बघो प्रेम हतो के लक्षणा पर प्रेम होवाइतां मारीचवध प्रकरणमां तेना पति कठोर शब्दो बोले छे. सीताने लक्षणा पर भाई करतां पण वधारे प्रेम हतो, परंतु पोतानो पति संकटमां छे ए कल्पना पण तेनाथी सहन थती न हती, तेथी बूम सांभणता ज गमे तेवा शब्दो बोली हती. अत्युत्तम प्रेमनो अही आविष्कार जोवा मणे छे. जेवो तेनो राम उपर प्रेम हतो तेवो तेने रामना सामर्थ्य पर पण विश्वास हतो, केवण मोह न हतो. राम उपर पूर्ण विश्वास हतो. कोईपण प्रकारना मोहने स्वाधीन न थतां पूर्ण विचार करीने ज सीताए राम पर प्रेम कर्यो हतो.

सीताने रामना माटे केवो विश्वास हतो ते जाणवा सीताहरणनो प्रसंग जुओ. रावण सीताने लई जाय छे त्यारे सीताने कहे छे, “राम हलको छे, हुं केटलो मोटो छुं, मारे त्यां सर्व देवो मारी शुश्रूषा करे छे. “सीता कहे, “पण तुं शियाण छे, हुं सिंहण छुं. तुं सिंहणनी अपेक्षा राखे छे ते तारी मुर्खाई छे. तने देवो मारी शक्ता नथी, ए तुं शुं बोले छे? देवो नहि मारी शके तो पण मारा राम तने मारशो.” केटली नीडरता. केटलो पोताना पतिना सामर्थ्य पर विश्वास. आम, राम तेनो आराध्य देव छे. सीताए राममां आत्मसमर्पण कर्यु हतुं. परिणामे रामना जे विचारो हता, ते ज सीताना हता. पति-पत्निना विचारो ज्यां जुदा होय त्यां रामराज्य क्यांथी आवे? खरो संसार आत्मसमर्पणमां छे.

सीता जेटली सौजन्यमूर्ति हती तेटली ज हृदयनी उदार पण हती. राक्षसीओए सीताने घाणी तकलीफ आपी छे. मारुतिराय दोडता आव्या छे अने पूछे छे, “तमने तकलीफ आपनार राक्षसीओने शुं बदलो आपुं?” सीता कहे, “कोईने पण कशी तकलीफ आपवानी नथी. तेओ तो पेटने माटे मने त्रास आपती हती. जेने मारवानो हतो तेने मार्यो ऐटले घाणुं थयुं.” मननुं आवुं औदार्य जोई कोने सीता तरफ पूज्य भाव उत्पन्न नहि थाय?

ज्यांसुधी सत् वात छे, त्यांसुधी रामायण छे अने ज्यांसुधी रामायण छे, त्यांसुधी सीता पण छे. स्वर्गानुं कोमण पुण्य जगतने सुगंधित करी चाल्युं गयुं ए जीवन पुण्यसुगंध फेलावी चाली गयुं. अधःपतित मानव तेनी कदर न करी शके. कोमण पुण्य पोतानुं कार्य पुरु करी चाली गयुं. तेनी सुगंध हजी पण लोकोने मणे छे अने हजारो वर्षो सुधी मणशे. ऐना गया पछी रामनी आंखोमां आंसुना पूर आव्या हता. अयोध्यावासीओमां तेनी निष्कलंकिता सिद्ध थई; पण ते दिव्य सीता मर्यादापुरुषोत्तमने पाढी न मणी तेनुं बलिदान ए अमर अने दिव्य कुरुप प्रसंग छे. आंखो भीनी थई जाय एवो ए प्रसंग छे. लोको तेथी तेने करुणांतिका Tragedy कहे छे. हुं कहु छुं “दिव्य शरुआत तेम दिव्य अंत छे.” जेना माटे सिंहासन आव्यु छे तेनुं मृत्यु दिव्य ज छे. जेनो जन्म लोकोत्तर, तेनुं अहीथी महाप्रयाग पण लोकोत्तर ज छे.

ऐ पुरुष बोलतां बोलतां आव्यु, तेणो जगतने मार्गदर्शन आप्यु, जगतने गुणो देखाउया अने चाली नीकण्युं. आ सीता पुण्यने लीधे ज रामायणने महत्व वध्यु छे. पतिने लीधे पत्नीनुं अने पत्नीने लीधे पतिनुं महत्व वध्यु छे. आ दिव्य चरित्रोनी महत्ता समजवा माटे उपर-उपनुं वांचन नही चाले. आवुं दिव्य अने अलौकिक बीजे वांचवा नही मणे.

संदर्भ सूचि

- पटेल, हेमराजभाई संस्कृत निबंध रत्नावली—संपादक: डो. जगदीशभाई जोशी पार्श्व पञ्चिकेशन: अमदावाद, प्रथम आवृत्ति : २००४
- पटेल, ची.ना. वाल्पीकिय रामकथा—गुर्जर ग्रंथरत्ना कार्यालय, अमदावाद.
- राजगोपालचारी, सी. रामायण—गुर्जर प्रकाशन, पहेली आवृत्ति : १९८८, अमदावाद
- संघवी, नगीनदास रामायणनी अंतर्द्यात्रा—आर. आर. शेठनी कंपनी, प्रथम आवृत्ति: जून—१९८६, अमदावाद
- स्वामी, सचियदानंद रामायणनुं चिंतन—गुर्जर साहित्य भवन, अमदावाद, पहेली आवृत्ति : डिसेम्बर, २०१०
- संसार—रामायण—स्वामी सचियदानंद, गुर्जर साहित्य भवन, अमदावाद, पुनर्मुद्रण : मे, २०१३